फिर से दिशा देने वाला क्रूस

(12:32)

लेखक की टिप्पणी: अप्रैल 16, 1995 वाला सप्ताह उन समयों में से एक था जिनमें लगता है जैसे संसार का अंत होने वाला हो। सोमवार की सुबह, एक सप्ताह पहले मेरे सबसे अच्छे मित्र के दिल के दर्द के कारण स्थानीय अस्पताल में कुछ टैस्ट होने थे। उसे टैस्टों की कोई चिंता नहीं थी और वह परीक्षणों के प्रति पूरी तरह से आशावादी भी था। पर दोहपर तक डॉक्टर ने उसे बता दिया कि उसकी स्थिति बहुत नाजुक है। अगले दिन उसे एक एम्बुलेंस से बाईपास सर्जरी के लिए 50 मील दूर हमारे राजधानी नगर के एक बड़े अस्पताल में ले जाया गया! उसी सोमवार को शाम सॉफ्टबॉल खेलते समय हमारी कलीसिया के एक प्राचीन (ऐल्डर) की आंख में ज़ोर से गेंद लग गई, जिस कारण उन्हें अस्पताल में ले जाना पड़ा और उनकी आंख पूरी तरह से नष्ट हो गई। उसी रात, स्थानीय विश्वविद्यालय की एक मसीही लड़की जिसे मैं उस समय नहीं जानता था, का मार्किट से अपहरण कर लिया गया। लड़की के मित्रों, विश्वविद्यालय के अधिकारियों और स्थानीय कलीसिया ने ज़ोर शोर से उसकी तलाश शुरू कर दी। मंगलवार की शाम, यह चौंकाने वाली खबर मिली कि उसकी लाश एक गांव की सड़क पर उसकी कार की डिक्की में रखी हुई मिली है। बड़े शहरों में ऐसे अपराध अक्सर होते रहते हैं, पर हमारे नगर में इस प्रकार की अमानवीय घटना के बारे में कभी किसी ने सोचा भी नहीं था। अगले दिन उस लड़की की याद में यूनिवर्सिटी के चैपल (प्रार्थना भवन) में प्रार्थना सभा रखी गई। आम तौर पर बातें करते रहने वाले छात्र सभागृह में शांत रहे और आधे घण्टे बाद बाहर जाने पर उनके मन दु:खी और गालों पर सूखे आंसुओं के निशान थे।

चैपल में प्रार्थना के बाद मैं अपने दफ्तर में जाकर बैठने ही वाला था कि किसी ने मुझे यह खबर दी कि ओक्लाहोमा नगर, ओक्लाहोमा में फैडरल ऑफिस की इमारत को बम से उड़ा दिया गया है और दो सौ से अधिक लोगों के मरने की आशंका है! तीन दिन में इससे बुरा और क्या हो सकता है? इसके बाद क्या होने वाला था?

इन सभी त्रासदियों का अर्थ समझने के लिए, मेरा दिमाग़ आने वाले रविवार के विचारों

की तरफ मुड़ने लगा। इस तरह की त्रासदी के सप्ताह के बाद क्या वचन सुनाया जा सकता था? रविवार से रविवार तक बीच के सात दिनों में होने वाली घटनाएं ध्यान बंटाने वाली थीं। ऐसे समय में, कलीसिया को क्या वचन सुनाया जाना चाहिए? मैं यूहन्ना रचित सुसमाचार की शृंखला के छब्बीस सप्ताह के अध्ययन को बहुत गहराई तक ले गया था। क्या मुझे यूहन्ना की पुस्तक को जारी रखना चाहिए या सप्ताह की दुखद घटनाओं के बारे में बात करनी चाहिए? मैंने उस सप्ताह कलीसिया को प्रार्थनापूर्वक मसीह के क्रूस ''की ओर लौटने'' में अगुआई देने का निर्णय लिया।

रविवार के दिन इकट्ठे होने पर हमारे अलग-अलग विचार तथा भावनाएं होती हैं। कई बार हम ऐसे विचार लेकर आते हैं जो हमें लेकर आने चाहिए। कई बार हम इसलिए आते हैं क्योंकि इकट्ठा होना आवश्यक है। इस रविवार, हमें विशेष रूप से पिछले सप्ताह की घटनाओं के कारण आना आवश्यक है। हमें एक दूसरे को सांत्वना तथा उत्साह देना चाहिए और हमें यह याद करवाया जाना आवश्यक है कि इस संसार में अन्तकाल तक रहने वाला क्या है। आज, हमें दूसरे बहुत से रविवारों की तुलना में प्रभु भोज की अधिक आवश्यकता है।

भोज हमें इसलिए लेना चाहिए क्योंकि उसमें क्रूस के बारे में नई दिशा देने वाला कुछ ऐसा है जिसे प्रभु भोज हमें याद करवाता है। पिछले सप्ताह ने हमें घूम-घूमकर लड़खड़ाने वाले बच्चों की तरह छोड़ दिया है। चक्कर खा रहे बच्चों की तरह हम बाहर देखते हैं, हमें लगता है कि सारी दुनिया घूम रही है और हम अपना संतुलन खो रहे हैं। ऐसे समय में हम किसी चीज़ को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाते हैं, जो ठोस और न हिलने वाली हो। हम इसे अपनी बातों के घेरे में ले लेते हैं और उसे तब तक कस कर पकड़े रखते हैं जब तक हमारे सिर घूमना बंद नहीं कर देते और हम एक बार फिर अपने दोनों पांवों पर खड़े नहीं होते। पिछले सात दिन की घटनाओं के बाद आज हम अपने आपको क्रूस से लिपटा हुआ पाते हैं।

जब मैं बीमार होता हूं, तो निराश हो जाता हूं और समय के साथ नहीं चल पाता। मुझे याद है कि एक बार बीमार होने के कारण मुझे ठीक होने के लिए कई दिन तक घर में रहना पड़ा था। स्वस्थ होने पर अक्सर मैं कहता हूं, ''पता नहीं आज कौन सा दिन है। लगता है कि मुझे फिर से अपने काम पर जाने के लिए एक रविवार लग जाएगा।'' एक उलझन भरे सप्ताह के बाद इकट्ठे होने पर आज ऐसा ही लग रहा है।

अलेक्ज़ेंडर सोलज़ेनिटसिन जो एक रूसी लेखक है ने स्टेलिन के काम करने के स्थान पर आठ वर्ष बिताए थे। उन कठिन वर्षों के दौरान दिन में कम से कम एक बार उसकी उम्मीद जवाब दे जाती थी और वह उसे छोड़कर सामान्य जीवन जीने को तैयार था। वह बीमार हो गया, थक गया और निराश हो गया था। बेलचे से काम करते हुए, सोलज़ेनिटसिन काम छोड़कर, एक लकड़ी के बैंच पर बैठ गया और आकर उसका काम देखने की प्रतीक्षा करने लगा। वह जानता था कि क्या होगा, क्योंकि उसने ऐसा पहले कई बार होते देखा था।

गार्ड ने बेलचा मार मारकर उस आदमी को अधमरा कर देना था। पर, इस दिन गार्ड की जगह किसी और ने सोलज़ेनिटसिन को वहां बैठे देखा। एक कुबड़ा बूढ़ा आदमी जिसके चेहरे पर कोई हावभाव नहीं था, आकर उसके पास बैठ गया। अपने हाथ में पकड़ी छड़ी से उसने सोलज़ेनिटसिन के पैरों के पास रेत पर एक क्रूस बना दिया। उसकी निराशा जाती रही, उसके मन में सच्चाई आ गई, उसका साहस लौट आया और उसमें जीने की इच्छा फिर से जाग उठी। उसने खड़े होकर, अपना बेलचा उठाया और काम करने लग पड़ा। वर्षों बाद, उसके लेखों से लाखों लोगों को प्रेरणा मिलनी थी। रेत में बनाए गए एक साधारण से क्रूस से सोलज़ेनिटसिन जोश में आ गया और उसका जीवन बच गया। आज जिस क्रूस को हम चाहते हैं, उसमें भी नई दिशा देने की वही सामर्थ है।

पूरे नये नियम में, बाइबल हमें क्रूस की ओर वापस लौटने को कहती है। कलीसिया के सामने चाहे कोई नई चुनौती, कोई उलझन भरा मुद्दा या बहुत बड़ी मुसीबत हो, परन्तु आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लेखक यही कहेंगे कि ''क्रूस की ओर देखो!'' यह देखकर कि हज़ारों साल पहले उन्होंने इन परिस्थितियों में कैसे किया, हमें याद दिलाया जाता है कि वही क्रूस आज जीवन की किसी भी परेशानी में हमारी सहायता करता है।

फूट का उत्तर

तूफ़ानों में कलीसिया की अगुआई करने का क्रूस का एक उदाहरण पौलुस की कुरिन्थियों के नाम पहली पत्री में मिलता है। उस कलीसिया के प्रारम्भ से ही, उनके साथ होने के कारण, पौलुस का स्वभाव उनके प्रति विशेष कोमलता भरा था। पर वह कलीसिया को विभाजित करने वाले बहुत से तर्कों और मुद्दों से बुरी तरह आहत भी था। अपने पत्र के परिचय में उसने उनसे एक होने का आग्रह किया:

> हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं (1 कुरिन्थियों 1:10,11)।

ऐसी मुश्किल का क्या हल है? पौलुस ने कहा कि इसका हल क्रूस ही था!

> ... हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं ... (1 कुरिन्थियों 1:23)।

> मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं (1 कुरिन्थियों 2:2)।

पौलुस ने उन्हें बताया कि, ''क्रूस की ओर देखो, और तुम्हें फूट पर काबू पाने का ढंग मिलता जाएगा।''

पीड़ा का उत्तर

कठिन समयों में कलीसिया की अगुआई का क्रूस का दूसरा उदाहरण 1 पतरस में मिलता है। यह पत्री कलीसिया पर सताव होने के समय लिखी गई थी, जब मसीही लोगों को उनके विश्वास के लिए दुख उठाना पड़ रहा था। निराशा के ऐसे समयों में मसीही लोग सांत्वना व अपनी बात बताने के लिए किसके पास जा सकते हैं? पतरस ने उन्हें क्रूस के पास जाने के लिए कहा:

> और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो। *न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।* वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मर कर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए (1 पतरस 2:21-24)।

पतरस यहां कह रहा था कि, ''क्रूस की ओर देखो और तुम्हें अपने दुख का सामना करने का ढंग मिल जाएगा।''

गलती का उत्तर

निराशाजनक उलझन में क्रूस के मसीही लोगों की अगुआई देने का एक तीसरा उदाहरण गलातियों की पत्री में मिलता है। शायद पूरे नये नियम के सबसे पहले लेख अर्थात गलातियों की पत्री पौलुस द्वारा अपनी पहली मिशनरी यात्रा के समय नई कलीसियाओं के आरम्भ करने में सहायता के बाद व्यवस्था को थोपने वालों का सामना करने के लिए ही लिखी गई थी। झूठे शिक्षक पौलुस की यात्राओं में उसके पीछे-पीछे थे और सिखा रहे थे कि मसीही लोगों को उद्धार पाने के लिए मूसा की व्यवस्था का पालन करना चाहिए। पौलुस ने इसे एक झूठ के रूप में देखा जो कलीसिया के अस्तित्व के लिए भी खतरा था। ऐसे झूठे शिक्षकों और उनकी झूठी शिक्षाओं का सामना करने के लिए मसीही लोगों को सहायता के लिए कहां जाना चाहिए? पौलुस ने कहा कि वे क्रूस के पास जाएं!

> पर यह बात प्रगट है, कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। पर व्यवस्था का विश्वास से कुछ सम्बन्ध नहीं; पर जो उन को मानेगा, वह उन के कारण जीवित रहेगा। मसीह ने जो हमारे लिए स्रापित बना; हमें मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्रापित है (गलतियों 3:11-13)।

पौलुस गलातिया के मसीही लोगों से कह रहा था, कि ''क्रूस की ओर देखो, और तुम्हें पता चल जाएगा कि विवादपूर्ण और उलझाने वाले विचारों का मूल्यांकन कैसे करना है।''

सारांश

यहां पहुंचने पर यूहन्ना की पुस्तक का हमारा अध्ययन आज की विषय-वस्तु के साथ एक दूसरे को काटता है। यीशु ने ऐलान किया, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा'' (12:32)। क्रूस हमारे मनों को खींचता और हमें अपने लिए मरने वाले अद्‌भुत उद्धारकर्त्ता की ओर आकर्षित करता है।

बिल ब्रिजवाटर जो एक लेखक है, ने बताया कि बचपन में एक गुंडा उसे कैसे सताता था और एक दिन उसने बिल के जन्म दिन पर मिली एक विशेष अंगूठी उससे ले ली। बिल हर रोज उससे वह अंगूठी लौटाने के लिए कहता पर वह गुंडा उसे यही कहता कि वह उसे अंगूठी लौटा देगा यदि वह उसे पूरे ज़ोर से उसके कंधे पर घूंसा मारने दे। दर्द होने के भय से बिल बिना अंगूठी लिए चला जाता, पर उसे शर्मिंदगी अवश्य होती। फिर एक दिन, बिल के एक अच्छे मित्र लैरी डेविस ने उस लड़के को बताया कि उसकी जगह वह घूंसा खा लेगा। उस गुंडे ने लैरी को घूंसा मारा और बिल को अंगूठी लौटा दी।

बचपन की उस बात को याद करते हुए, ब्रिज वाटर ने लिखा है, ''आज मुझे यह तो याद नहीं कि वह अंगूठी कहां गई, पर मुझे यह नहीं भूला कि लैरी ने मेरे लिए क्या किया था जब उसने उस दिन मेरी जगह मार खाई थी।''

आज मसीह का क्रूस हमें चक्कर खाने वाले सप्ताह के बाद फिर से दिशा देने में हमारी सहायता करता है। यह हमें दिखाता है कि नई और निराशा भरी चुनौतियों का सामना कैसे किया जाए। यह हमारे मनों को ज़ोर से खींचता, और परमेश्वर की ओर ले जाता है।